अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या कथन

5.3 शोध के उद्देश्य

5.4 शोध परिकल्पनाएँ

5.5 शोध के चर

5.6 शोध समस्या की सीमायें

5.7 शोध प्रतिदर्श

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण

5.9 सांख्यिकी प्रविधि

5.10 अध्ययन के मुख्य परिणाम

5.11 निष्कर्ष

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय – पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना :–

सारांश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इस अध्याय में लघुशोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिए गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन् के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

विद्यालय में प्रार्थना एक ऐसा धार्मिक मूल्य है जो छात्रों के चरित्र का निर्माण, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रभक्ति, संस्कारिता, सद्भावना, प्रेम, दयाभाव जैसे सद्गुणों का विकास करना है। जबकि लालच, ऊँच–नीच, गर्व, चपलता, आलस तथा ईर्ष्या जैसे दुर्गुणों को नष्ट करना है। अतः प्रार्थना को विद्यालय की दैनिक क्रियाओं में शामिल किया गया है।

5.2 समस्या कथन :–

वर्तमान अध्ययन प्रारंभिक (कक्षा सातवीं) एवं माध्यमिक (कक्षा दसवीं) में अध्ययनरत् छात्रों की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति के अध्ययन पर आधारित हैं।

वर्तमान अध्ययन का समस्याकथन इस प्रकार है।

''प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।''

5.3 शोध उद्देश्य :–

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक एवं माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना की समय, अवधि और प्रकृति का अध्ययन करना।
2. प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों की तुलना करना।
3. ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान अंको की तुलना करना।
4. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान अंको की तुलना करना।
5. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों की तुलना करना।
6. छात्र एवं छात्राओं में शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों की तुलना करना।
7. ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान अंको की तुलना करना।
8. शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों की तुलना करना।
9. ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों की तुलना करना।

10. शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों की तुलना करना।

5.4 शोध परिकल्पनाएँ :–

1. प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।
5. छात्र एवं छात्राओं के शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
9. शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 शोध के चर :–

स्वतंत्र चर – क्षेत्र/कक्षा/लिंग

आश्रित – शालेय/प्रार्थना/अभिवृत्ति

5.6 शोध समस्या की सीमायें :–

1. यह अध्ययन गुजरात राज्य के सुरत शहर के शहरी क्षेत्र एवं वलसाड के ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित है।
2. यह अध्ययन कक्षा सातवीं एवं कक्षा दसवीं तक ही सीमित हैं।
3. यह अध्ययन गुजराती माध्यम के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

5.7 शोध प्रतिदर्श :–

वर्तमान शोध अध्ययन के लिए नौ स्कूलों को यादृच्छिक विधि से चुना गया। जिसमें छः ग्रामीण है एवं तीन शहरी है। सभी स्कूलों में से कक्षा सातवीं के 20 विद्यार्थियों और कक्षा दसवीं के 20 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चुना गया। इन नौ स्कूल में से कुल 240 छात्रों का चयन शोध अध्ययन में किया गया है।

5.8 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

शोधकर्ता ने वर्तमान शोध अध्ययन के लिए स्वनिर्मित "शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति परीक्षण" प्रश्नावली का उपयोग किया गया ह। (परिशिष्ट)

5.9 सांख्यिकी प्रविधिः–

वर्तमान अध्ययन में 't' परीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

5.10 अध्ययन के मुख्य परिणाम :–

1. प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में प्रार्थना की अवधि, समय और प्रकृति में ज्यादा अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में थोडासा अंतर है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र की शाला में ज्यादातर प्रार्थना सुबह में की जाती है और सुबह, दोपहर और शाम तीनों समय की जाती है। जबकि शहरी क्षेत्र की शाला में प्रार्थना सिर्फ सुबह और दोपहर होती है। सभी शाला में ज्यादातर श्लोक, सरस्वती वंदना जनगनमन एवं वन्देमातरम् गाया जाता है।
2. प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति ज्यादा पाई गई।
4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में अंतर पाया गया। जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति ज्यादा पाई गई।
5. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
6. लिंग के आधार पर छात्र एवं छात्राओं में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
7. ग्रामीण क्षेत्र के कक्षा सातवीं के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पड़ता है।

8. शहरी क्षेत्र के कक्षा सातवीं के छात्र और छात्राओं में भी शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

9. ग्रामीण क्षेत्र के कक्षा दसवीं के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। लेकिन मध्यमान देखने से पता लगता है कि कक्षा सातवीं के छात्र एवं छात्राओं से प्रभाव कम है।

10. शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय (10) के विद्यार्थियों के छात्र एवं छात्राओं की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति के मध्यमान अंकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5.11 निष्कर्ष :–

1. प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में प्रार्थना की अवधि, समय और प्रकृति में ज्यादा अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में थोडासा अंतर है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्र की शाला में ज्यादातर प्रार्थना सुबह में की जाती है और सुबह, दोपहर और शाम तीनों समय की जाती है। जबकि शहरी क्षेत्र की शाला में प्रार्थना सिर्फ सुबह और दोपहर होती है। सभी शाला में ज्यादातर श्लोक, सरस्वती वंदना जनगनमन एवं वन्देमातरम् गाया जाता है।

2. प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों प्रारंभ से ही प्रार्थना करते हैं। अतः वह जैसे–जैसे बढ़ने लगती है। वह प्रार्थना को अपना नित्यक्रम मानने लगते है। अतः प्रारंभिक एवं माध्यमिक विद्यालयों

के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति ज्यादा पायी गई। इसका कारण यह हो सकता है कि गाँव में प्रार्थना का समय ज्यादा होता है। जबकि शहर के विद्यालयों में संगीत के साधन ज्यादा होते हैं एवं संगीत शिक्षक भी होता है और विविध सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ होती है। अतः शहरी विद्यालयों में प्रार्थना अभिवृत्ति ज्यादा है।

4. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शालेय प्रार्थना के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

इसका कारण यह है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों जैसे-जैसे बड़े होते है वह प्रार्थना के महत्व को समझ ने लगते है। उसमें आध्यात्मिक मूल्य का भी विकास होने लगता है। अतः दोनों में सार्थक अंतर नहीं है।

5. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति ज्यादा पायी गई। इसका कारण यह हो सकता है कि गाँव में ज्यादात्तर रामलीला, कृष्णलीला, भागवत सप्ताह, भजन मंडली इत्यादि प्रवृत्तियाँ होती रहती है जिसमें बालक हिस्सा लेते रहते हैं जबकि शहर में ये प्रवृत्तियाँ बहुत कम देखी जाती है। अतः जब प्रार्थना सभा में यही प्रवृत्तियाँ 5-10 मिनिट के लिये होती है तो विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ता है। प्रार्थना करना एवं

हिस्सा लेना उन्हें अच्छा लगता है। इस कारण से शहर में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति ज्यादा हो सकती है।

6. लिंग के आधार पर छात्र एवं छात्राओं में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि वर्तमान समय में ज्यादात्तर प्रवृत्तियों में लड़के और लड़कियों के बीच अंतर नहीं है। एक कारण यह भी हो सकता है कि शाला में प्रार्थना सभी के लिये अनिवार्य है। जिसकी कारण छात्रा एवं छात्राओं में अंतर नहीं पाया गया।

7. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कक्षा सातवीं के छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि आज गाँव एवं शहर में भी ज्यादा अंतर नहीं है। गाँव में भी आधुनिक संगीत साधन का उपयोग होने लगा है और शहर की तरह गाँव में भी संगीत शिक्षक होते हैं अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

8. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के कक्षा दसवीं के छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक शालाओं की प्रार्थना सभा में जो भी प्रवृत्तियाँ होती है वह मनोरंजनपूर्ण होती है। साथ में वह प्रार्थना का अर्थ एवं महत्व को समझने लगते हैं। वह प्रार्थना की निर्मल भावना, प्रार्थना से मिलने वाले संस्कार एवं गुण को व सही अर्थ में समझने लगते हैं। इसी कारण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में सार्थक अंतर नहीं है।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. प्रारंभिक स्तर पर शहरी शिक्षकों व शिक्षिकाओं में शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राथमिक शाला एवं माध्यमिक शाला की विविध प्रार्थना व्यवस्था पर अध्यापन किया जा सकता है।
3. विविध आश्रमों (गांधी आश्रम) की दृष्टि से प्रार्थना अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।
4. प्राथमिक स्तर पर शिक्षक की शालेय प्रार्थना अभिवृत्ति पर अध्ययन किया जा सकता है।
5. विद्यालयी प्रार्थना की आवश्यकता एवं इसके प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर अध्ययन किया जा सकता है।
6. धार्मिक मूल्य के रूप में प्रार्थना का अध्ययन किया जा सकता है।
7. आदिवासी विद्यालयों में होनेवाली प्रार्थना शहरी क्षेत्र में होनेवाली प्रार्थना का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।